cable. As a result of the examination, the forms and returns under the Labour and Factory Rules as also under the Central Excise Rules which together constitute the bulk of the forms and returns required of the tea estates have been standardised and simplified.

Prices of Jute in Tripura

1897. Shri Dasaratha Deb: Will the Minister of **Commerce and Industry** be pleased to state:

(a) what is the average price of jute in Tripura this year;

(b) how does it compare with price of jute in the previous year; and

(c) the steps taken to keep the price high?

The Minister of International Trade in the Ministry of Commerce and Industry (Shri Manubhai Shah): (a) to (c). The price of raw jute during 1960-61 season ruled at abnormally high levels owing to acute scarcity of the fibre as a result of two successive bad crops. These prices therefore were abnormal and as such not comparable. The price of Assam Bottom in Tripura in 1961-62 varied from Rs. 29/- to Rs. 20/- the corresponding price at Calcutta being Rs. 39 and Rs. 30/- respectively. Special efforts are being made to support prices by stepping up purchases by the Buffer Stock Association.

Mica Export Duty Rate

1898. Shri Yallamanda Reddy: Will the Minister of **Labour and Employment** be pleased to state:

(a) whether Government are contemplating to raise the rate of the mica export duty in order to enhance financial assistance to the Mica Mines Labour Welfare Fund;

(b) if so, when; and

(c) if not, the reasons therefor?

The Minister of Labour in the Ministry of Labour and Employment (Shri Hathi): (a) No.

(b) Does not arise.

(c) An accumulated balance of about Rs. 2·0 crores in the Mica Mines Labour Welfare Fund.

तिहाड़ ग्राम (दिल्ली) का पुनर्निर्माण

१८९९. श्री भक्त दर्शन : क्या **निर्माण, आवास और संभरण** मंत्री २४ नवम्बर, १९६१ के अतारांकित प्रश्न संख्या २२३ के उत्तर के संबंध में यह बताने की कृपा करेंग कि दिल्ली के विस्थापित व्यक्तियों की एक बस्ती तिहाड़ ग्राम के पुनर्निर्माण के बारे में क्या प्रगति हुई है ?

निर्माण, आवास और संभरण मंत्रालय में उपमंत्री (श्री जगन्नाथ राव) : १३ जुलाई, १९६१ को दिल्ली नगर निगम ने तिहाड़ ग्राम के पुनर्निर्माण के लिये लगभग २७.४४ लाख रुपय की लागत की योजना मंजूर की थी । अपेक्षित योजना के अनुसार ६२.३३ एकड़ भूमि का विकास होना था और विकसित खंडों पर ६७८ परिवारों को बसाने की व्यवस्था की गई थी । योजना के अनुमोदित होने के उपरांत, नगर निगम ने क्षेत्र का विस्तृत सर्वेक्षण किया और योजना के अन्तर्गत भूमि के हस्तांतरण तथा अर्जन के बारे में बात चीत आरम्भ कर दी । १९६२ के आरम्भ तक सर्वेक्षण का कार्य पूर्ण हो गया और यह ज्ञात हुआ कि मौलिक अभिन्यास (ले आउट) योजना जो कि नगर योजना सघटन ने तैयार की थी, गतकाल की होने के कारण वर्तमान वास्तविक स्थितियों से मेल नहीं खाती । इस लिय अब पुनरीक्षित अभिन्यास (ले आउट) योजना तैयार की जा चुकी है और टेंडर बुलाने के लिय विस्तृत तखमीने तैयार किय जा रहे हैं । जून, १९६२ में कार्य आरम्भ होने की सम्भावना है ।